बी॰ ए॰ तृतीय वर्ष - रमेश कुमार यादव
हिन्दी-प्रतिष्ठा हिंदी-विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर-(बिहार)

प्रश्न:- निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी काव्यात्मक विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

निराला का परिवार मूलत: उन्नाव जिले (उत्तर प्रदेश) के गढ़ाकोला नामक गाँव का निवासी था पर उनका जन्म 1897 ई. में बसन्त पंचमी के दिन मेदनीपुर जिले के महिषादल (बंगाल) राज्य में हुआ था। सन 1961 ई॰ में उनका स्वर्गवास हुआ। पिता पं॰ राम सहाय त्रिपाठी महिषादल राज्य में ही नौकरी करते थे और वहीं सपरिवार रहते थे। इस तरह बचपन तो अच्छे खाते-पीते परिवार में व्यतीत हुआ पर किशोरावस्था से विपत्तियों का जो आगमन आरंभ हुआ की उसने कवि को हिला-कर रख दिया। पहले मातृशोक और फिर पितृशोक। विवाह चौदह वर्षों की अवस्था में ही हो गया था। इन्फ्लुएंजा के प्रकोप ने परिवार के अनेक अन्य सदस्यों को निगल लिया।

एक पुत्री सरोज और पुत्र रामकृष्ण को शिशु अवस्था में ही पति के सहारे छोड़ पत्नी मनोहरा देवी भी चल बसीं। पत्नी-वियोग से टूट निराला युवती पुत्री का विवाह कर बुढ़ापे की दहलीज पर पैर रख रही थी कि विवाहिता पुत्री सरोज ने भी साथ छोड़ दिया। 'सरोज-स्मृति' पुत्री को कवि पिता द्वारा अर्पित काव्यांजलि है।

निराला अपनी प्रबल मौलिकता तथा नवोन्मेष शालनी प्रतिभा की बदौलत साहित्यिक वर्ग में भी

काफी दिनों तक उपेक्षित रहे। पर नूतन प्रयोग, जनोन्मुख स्वर, कुशल कलात्मकता स्वतंत्रता-प्रेम, विद्रोह, ओज, पौरुष, पौराणिकता, दार्शनिकता आदि विशेषताओं से वे हिन्दी काव्य को समृद्धि देते रहे। व्यक्तिगत जीवन में भी अक्खड़ता, दानशीलता, स्वाध्याय और लेखन के आगे उन्होंने किसी अन्य बात को कभी महत्व नहीं दिया।

1916 ई० में लिखित कविता 'जूही की कली' से निराला की कविता-यात्रा आरम्भ होती है। अनामिका (1923 ई०), परिमल (1930 ई०) गीतिका (1936 ई०) और तुलसीदास (1938 ई०) उनकी छायावादी कविताएँ हैं। आगे 'कुकुरमुत्ता', 'गर्म पकौड़ी' 'प्रेम-संगीत', 'रानी और कानी', 'खजोहरा', 'मास्को डायलॉग्स', 'नये पत्ते' में निराला भाव-भाषा दोनों दृष्टियों से प्रगतिवादी भूमि पर खड़े दिखते हैं।

कवि निराला का विशेष महत्व उनकी विविधता को लेकर है। छन्द-मुक्ति, ओज, पौरुष सामाजिक भाषा की सघनता और जनोन्मुखता जैसी विशेषताएँ उन्हें अन्य कवियों से अलग प्रतिष्ठित करती हैं। व्यक्तिगत अपरिग्रह और उच्च चिन्तन भाव के चलते उनके नामपूर्व निःस्व और महाप्राण जैसे विश्लेषण लगाने की परंपरा बन चुकी है।

हिन्दी कविता कामिनी को छन्दों के बंधन से मुक्ति दिलाने और विविध स्वर तथा रूपों की सुसज्जता देने वाले कवि सूर्यकान्त-त्रिपाठी निराला मुख्य रूप से ओज और पौरुष के

कवि रहे हैं। प्रकृति, सृष्टि और सौन्दर्य को निराला ने भी अपने काव्य में यथेष्ट महत्व दिया है पर साथ ही सामाजिक स्तर पर उत्पन्न मानवीय समस्याऐं भी उन्हें आन्दोलित करती रही हैं। बाद में उनमें काव्य भी इसी चेतना का रूपांतर या विकास 'कुकुरमुत्ता' जैसे पूर्णत: यथार्थवादी और व्यंग्यात्मक प्रगतिशील काव्य के रूप में दिखाई पड़ा था।

निराला की पहली प्रकाशित कविता 'जूही की कली' है, जिसकी रचना 1916 ई. के ही आसपास हुई थी। यानी जब छायावाद का आरंभ भी नहीं हुआ था तभी उन्होंने अपने प्रयोग की नवीनता का एक नमूना प्रस्तुत कर दिया था। उस कविता की पहली विशेषता छन्द के बन्धन से पूर्णत: मुक्त है और दूसरा है पौरुष भाव का पूर्ण प्रतिपादन। चाक्षुष और गत्वर बिम्बों के इस कविता से अधिक अच्छे उदाहरण छायावादी काव्य में बहुत मुश्किल से मिल पाएंगे। मिलेंगे भी तो निराला में ही:

"सोती थी सुहाग भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न -
अमल-कोमल तनु तरुणी-जूही की कली,
दृग बन्द किये, शिथिल, पत्रांक में।"

इस स्पष्ट चाक्षुष बिम्ब के बाद दूरस्थ पवन के मस्तिष्क में एक स्मृति बिम्ब बनता है,

"आयी याद कान्ता की कंपित कमनीय गात"

और फिर गत्वर बिंब-विधान का प्रसंग आता है —

"उपवन - सर - सरित गहन - गिरि - कानन
कुंजलता - पुंजों को पार कर पहुँचा।"

निराला की तीसरी अन्यतम विशेषता सामासिकता के भी पर्याप्त उदाहरण इस प्रथम कविता में ही मिल जाते हैं।

इनमें कोई दो मत नहीं कि निराला ओज और पौरुष के कवि हैं। शायद यही कारण है कि उनके जैसी करुणा भी किसी अन्य छायावादी कवि के काव्य में नहीं मिलती। प्रसाद जी की करुणा अन्तर्मुखी थी जो आँसू के रूप में व्यक्त होती थी पर निराला की करुणा बहिर्मुखी होने के चलते प्रायः आक्रोश के रूप में व्यक्त होती थी।

निराला काव्य में पवन, पवन-पुत्र हनुमान, जाम्बवान या राम जो भी पात्र हैं वह पूर्णतः पौरुष से युक्त हैं। उनके संवादों और उनकी भाषा में पर्याप्त ओज है। कवि के भी अपने वर्णन-चित्रण या संवादों में यह पौरुष और ओज छिप नहीं पाता निराला के ओज - गुण की विशेषता यह है कि वह शब्दों के साथ ही भावों में भी भरा हुआ है। इस दृष्टि से उनकी कविताओं में बादल-राग, 'राम की शक्ति पूजा' भारती वन्दना, जागो फिर एक बार, 'आवाहन' आदि कविताओं का विशेष महत्व है।

ओज गुण मूलतः वीरतामूलक गुण होता है जिससे चित्त में उत्साह भरता है और दीप्ति तथा स्फीति आती है। निराला की कविता 'बादलराग' की आरंभिक पंक्तियों में ही इसका सम्पूर्ण परिचय

मिल जाता है—

झूम-झूम मृदु गरज-गरज घनघोर !
राग-अमर ! अम्बर में भर निज रोर !"

इस कविता में ओजगुण के अनुकूल कठोर प्रकृति वाले त, थ, ध और सर्वाधिक कटुपन का अत्यधिक प्रयोग ध्यान आकर्षित करता है। 'जागो फिर एक बार' में भागवत ओजपौरुष के उदाहरण भरे पड़े हैं, 'सिंहनी की गोद में आया है आज स्यार' में भागवत ओज द्रष्टव्य है। ओजगुण तथा पौरुष भाव की दृष्टि से 'राम की शक्तिपूजा' आधुनिक हिन्दी का सर्वोत्तम अध्याय है। इसकी कुछ पंक्तियाँ —

"शतशैल सम्वरणशील नील नभ-गर्जित-स्वर,
प्रतिपल परिवर्तित व्यूह-भेद-कौशल-समूह-
राक्षस-विरुद्ध-प्रत्यूह-क्रुद्ध-कपि-विषम-हूह ..."

वैसे निराला के काव्य में दार्शनिक-रहस्यात्मक कविताओं की भी भरमार है पर प्रत्यक्ष, प्रकृति, सगुण देवी या सप्राण तथा मूर्त पात्रों अथवा समस्याओं के चित्रण में उन्हें विशेष सफलता मिली है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी वि॰)
डी॰ के कालेज डुमरांव
बक्सर (बिहार)